5. चींटी, चंद्रलोक में प्रथम बार (सुमित्रानंदन पंत)

अभ्यास

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सुमित्रानंदन पंत का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०– सुमित्रानंदन पंत का जन्म 20 मई, 1900 ई. को अल्मोड़ा के समीप कौसानी नामक ग्राम में हुआ था।

2. सुमित्रानंदन पंत का पालन-पोषण किसने किया?

उ०– सुमित्रानंदन पंत का पालन-पोषण उनकी दादी और पिता ने किया था।

3. सुमित्रानंदन पंत के बचपन का क्या नाम था?

उ०– सुमित्रानंदन पंत के बचपन के नाम गुसाईं दत्त था।

4. सुमित्रानंदन पंत ने काव्य रचना कितने वर्ष की आयु में प्रारंभ की?

उ०– सुमित्रानंदन पंत ने काव्य रचना सात वर्ष की अल्पायु में प्रारंभ की।

5. पंत जी ने शिक्षा कहाँ से प्राप्त की?

उ०– पंत जी ने उच्च शिक्षा का प्रथम चरण अल्मोड़ा में पूर्ण किया। इसके बाद इन्होंने काशी के क्वींस कॉलेज से शिक्षा ग्रहण की।

6. सुमित्रानंदन पंत की कविताएँ किस पत्रिका में प्रकाशित होती थीं?

उ०– सुमित्रानंदन पंत की कविताएँ 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित होती थीं।

7. पंत जी ने आल इंडिया रेडियो के परामर्शदाता के रूप में कब तक कार्य किया?

उ०– पंत जी ने आल इंडिया रेडियो के परामर्शदाता के रूप में 1950 से 1957 तक कार्य किया।

8. 'लोकायतन', 'चिदंबरा', 'कला और बूढ़ा चाँद', कृतियों पर पंत जी को कौन-कौन से पुरस्कारों से सम्मानित किया गया?

उ०– पंत जी को 'लोकायतन' पर सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, 'चिदंबरा' पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार तथा 'कला और बूढ़ा चाँद' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

9. पंत जी की प्रमुख काव्य-कृतियों के नाम लिखिए।

उ०– पंत जी की प्रमुख काव्य-कृतियाँ हैं- लोकायतन, पल्लव, वीणा, ग्रंथि, गुंजन, युगांत, ग्राम्या एवं युगवाणी आदि हैं।

10. पंत जी की मृत्यु कब हुई?

उ०– पंत जी की मृत्यु 28 दिसंबर, सन् 1977 ई. को हुई।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1.पंत जी ने चींटी को किसका प्रतीक माना है?

उ०– पंत जी ने चींटी को क्रियाशील श्रमिक का प्रतीक माना है, जो निरंतर अपने कार्य में लगे रहते हैं।

2.कवि 'पिपीलिका पाँति' के रूप में जीवन के किस आदर्श की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं?

उ०– कवि चींटी की पंक्ति के रूप में पाठकों का ध्यान इस आदर्श की ओर आकर्षित करना चाहते हैं कि चींटियाँ अनुशासन में रहकर कार्य करती हैं और अपने कार्य में निरंतर लगी रहती हैं। मनुष्यों को भी चींटी के इन आदर्शों को अपनाना चाहिए।

3.कवि ने चींटी को सुनागरिक क्यों बताया है?

उ०– कवि ने चींटी को इसलिए सुनागरिक बताया है क्योंकि उसका भी अपना समाज होता है, जिसके नियमों का पालन करना उसके लिए आवश्यक होता है। वह अपने समाज में हिल-मिलकर नियमपूर्वक रहती है। वह कठोर परिश्रमी जीव है और उसमें एक अच्छे नागरिक के सभी गुण विद्यमान होते हैं।

4.चींटी कविता से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

उ०– चींटी कविता से हमें शिक्षा मिलती है कि हमें भी चींटी की भाँति अनुशासन में रहकर निरंतर कार्य में संलग्न रहना चाहिए। जिस तरह चींटी कठोर परिश्रम के द्वारा अपनी भोजन सामग्री एकत्र करती है उसी प्रकार हमें भी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कठोर श्रम करना चाहिए तथा अपने समाज में रहते हुए उसके नियमों का निष्ठापूर्वक पालन करना चाहिए तथा एक अच्छा नागरिक बनना चाहिए।

5.चींटी कविता का सारांश लिखिए।

उ०– चींटी कविता सुमित्रानंदन पंत द्वार रचित ग्रंथ 'युगवाणी' से ली गई है जिसमें कवि ने चींटी की क्रियाशीलता को प्रदर्शित किया है। कवि कहते हैं कि क्या तुमने ध्यानपूर्वक कभी चींटी को देखा है। चींटियों की पंक्ति एक सीधी काली रेखा के समान दिखाई पड़ती है। जब चींटियाँ चलती हैं तो ऐसा लगता है जैसे काला धागा हिल-डुल रहा हो। वे अपने छोटे-छोटे पैरों से मिलती जुलती हुई चलती हैं। कवि चींटी की कार्यक्षमता पर प्रकाश डालते हुए कहता है कि चींटी निरंतर अपने कार्य में लगी रहती है। उसका भी अपना घर समाज होता है, वह गाय चराती है। (प्राणिशास्त्रियों के अनुसार चीटियों में गायें भी होती हैं।) उन्हें धूप खिलाती हैं, बच्चों की देखभाल व शत्रुओं से न डरकर अपनी सेना को संगठित करती हैं तथा अपना घर, आँगन साफ करती है। चींटी समाज में रहने वाला प्राणी है जो कठिन परिश्रमी एवं एक अच्छी नागरिक है। चींटी का शरीर भूरे बालों की कतरन के समान छोटा एवं पतला है। उसके आकार का छोटापन विश्वविख्यात है, परंतु उसका हृदय असीम साहस से भरा होता है। वह संपूर्ण पृथ्वी पर निडर होकर विचरण करती है तथा पूरी लगन से अपने कार्य में लगी रहती है। वह जीवन की अक्षय चिंगारी के समान है। वह तिल के समान छोटी होते हुए भी, प्राणों की झिलमिलाहट से पूर्ण है। वह दिनभर में मीलों लंबा सफर तय करती है तथा बिना परिश्रम व थकान से घबराते हुए अपने कार्य में लगी रहती है।

6. कवि ने क्यों व किस कार्य को ऐतिहासिक क्षण कहा?

उ०– कवि ने मनुष्य के प्रथम बार चंद्रलोक पर कदम रखने को ऐतिहासिक क्षण कहा क्योंकि इस घटना के साथ ही देश और काल से जुड़ी बाधाओं के न जीते जा सकने वाले सारे बंधन छिन्न भिन्न होकर बिखर गए हैं और मनु के पुत्रों अर्थात् मानव ने दिग्विजय प्राप्त कर ली है।

7. मानव का कौन-सा स्वप्न पूर्ण हुआ है तथा क्यों?

उ०– मानव युगों-युगों से चंद्रमा को लेकर विभिन्न सुनहरे स्वप्न देखा करता था। मनुष्य के चंद्रमा के पहुँचने के कारण ये सुनहरे सपने साकार हो गए हैं तथा पृथ्वी का चंद्रमा से संबंध जुड़ गया है।

8.पंत जी ने किन पंक्तियों में लोकमंगल की कामना की है?

उ०– पंत जी ने निम्नलिखित पंक्तियों में लोकमंगल की कामना की है-

दिग्-विजयी मनु-सुत, निश्चय,
यह महत् ऐतिहासिक क्षण
भू-विरोध हो शांत।
निकट आएँ सब देशों के जन।

फहराए ग्रह उपग्रह में
धरती का श्यामल अंचल,
सुख संपद् संपन्न जगत् में
बरसे जीवन-मंगल।
धरा चंद्र की प्रीति परस्पर
जगत प्रसिद्ध पुरातन,
हृदय-सिंधु में उठता
स्वर्गिक ज्वार देख चन्द्रानन!

9. 'चंद्रलोक में प्रथम बार' कविता का सारांश लिखिए।

उ०– 'चंद्रलोक में प्रथम बार' कविता सुमित्रानंदन पंत जी के काव्य ग्रंथ 'ऋता' से ली गई है। जिसमें कवि ने प्रथम बार मानव के चाँद पर पहुँचने की ऐतिहासिक घटना का वर्णन किया है।

जब मनुष्य प्रथम बार चाँद पर पहुँचा तो उस समय इस घटना के साथ देश और काल के उन सारे बंधनों, जिन पर विजय पाना कठिन समझा जाता था छिन्न-भिन्न हो गए। यह निश्चय ही मनु के पुत्रों मानव की दिग्विजय थी। कवि कामना करता है इस ऐतिहासिक क्षण में पृथ्वी पर दिखाई देने वाले विरोध शांत हो जाएँ और सभी देशों के लोग एक-दूसरे के निकट आए जाएँ।

मनुष्य का पुराने समय से ही चंद्रमा के साथ घनिष्ठ संबंध रहा है। मानव द्वारा चंद्र विजय कर लेने से मानव का चाँद को लेकर देखे जाने वाला पुराना सपना साकार हो गया है और एक नए चंद्र युग का आरंभ हुआ है। अब धरती का हरा-भरा अंचल ग्रहों और उपग्रहों सब जगह पर फहराया जाए और समस्त संसार में सुख व संपत्ति की प्रचुरता हो तथा सब जगह मंगल ही मंगल हो। अमेरिका और सोवियत संघ रूस जैसे विशाल देश नई दिशाओं का निर्माण करें क्योंकि अंतरिक्ष विज्ञान में यही देश सर्वाधिक प्रगति कर रहे हैं। संसार में जीवन पद्धतियों का भेद समाप्त होकर 'वसुधैव कुटुम्बकम' की स्थापना हो जाए। विज्ञान का संपूर्ण विकास मानव के कल्याण के लिए ही होना चाहिए। परमाणु शक्ति मानव जीवन के संहार का साधन न होकर पृथ्वी पर स्वर्ण निर्माण का साधन बननी चाहिए। विश्व में मानवता ही सर्वोपरि हो जिसके सामने पृथ्वी के सभी राष्ट्रों को नतमस्तक होना चाहिए। पृथ्वी व चंद्रमा का प्रेम जगत में विख्यात है और बहुत पुराना है। चंद्रमा पृथ्वी का ही एक अंग है। आज भी पूर्णिमा के दिन चंद्रमा को देखकर पृथ्वी के सागररूपी मन में ज्वार उठता है जो पृथ्वी और चंद्रमा के पुराने प्रेम व संबंधों का परिचायक है।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1.सुमित्रानंदन पंत का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक परिचय पर प्रकाश डालिए।

उ०– सुमित्रानंदन पंत छायावादी युग के महान कवियों में से एक थे। इनका काव्य अधिकांशत: प्रकृति चित्रण पर आधारित है। इसलिए इन्हें 'प्रकृति के सुकुमार कवि' भी कहा जाता है। हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने पंत के विषय में लिखा है-''पंत केवल शब्द-शिल्पी ही नहीं, महान् भाव-शिल्पी भी हैं और सौंदर्य के निरंतर निखरते सूक्ष्म रूप को वाणी देने वाले, एक संपूर्ण युग को प्रेरणा देने वाले प्रभाव-शिल्पी भी।''

जीवन परिचय–कविवर सुमित्रानंदन पंत का जन्म 20 मई, 1900 ई. को अल्मोड़ा के समीप कौसानी नामक ग्राम में हुआ था। इनके जन्म के 6 घंटे बाद ही माता का देहांत हो गया, जिसके कारण इनकी दादी और पिता ने इनका लालन-पालन किया। इनके पिता का नाम गंगादत्त पंत था। ये जन्मजात कवि थे, इन्होंने सात वर्ष की अल्पवय में ही काव्य-रचना प्रारंभ कर दी थी।

पंत जी ने उच्चशिक्षा का प्रथम चरण अल्मोड़ा में पूर्ण किया। वहीं पर इन्होंने अपना नाम गुसाईं दत्त से बदलकर सुमित्रानंदन पंत रख लिया।

सन् 1919 ई. में पंत जी अपने मँझले भाई के साथ काशी चले गए। वहाँ आपने क्वींस कॉलेज में शिक्षा ग्रहण की। यहीं आप कवि कर्म की ओर विशेष रूप से उन्मुख हुए। आप की कविताएँ 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित होने लगीं। काशी में पंत जी का परिचय रवींद्रनाथ ठाकुर और सरोजिनी नायडू के काव्य के साथ-साथ अंग्रेजी की रोमांटिक कविता से हुआ। अब आपकी कविता सहृदय काव्य-मर्मज्ञों के हृदय में धाक जमाने लगी थी।

इसके बाद सन् 1950 ई. में आपको आल इंडिया रेडियो के परामर्शदाता के पद पर नियुक्ति मिली। इस पद पर आप 1957 ई. तक कार्य करते रहे।

आपको 'लोकायतन' पर सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार और 'चिदंबरा' पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। 'कला और बूढ़ा चाँद' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार से भी पुरस्कृत हुए। भारत सरकार ने आपको 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया। 28 दिसंबर सन् 1977 ई. को सरस्वती का यह उपासक लौकिक जगत् को त्यागकर गोलोकवासी हो गया।

साहित्यिक परिचय– पंत जी जहाँ सौंदर्य एवं प्रकृति के सुकुमार कवि हैं, वहीं उनकी मानवतावादी दृष्टि भी किसी से छिपी नहीं है। काव्य सृजन का जो वास्तविक उद्देश्य है, उसकी पूर्ति सर्वत्र की गई है। इस दृष्टि से हिंदी साहित्य में कवि पंत का स्थान बहुत ऊँचा है। पंत जी का काव्य युग के साथ बदलता रहता है। प्रारंभ में वे छायावादी रहे बाद में प्रगतिवादी चेतना से युक्त हो गए। कालांतर में उनकी कविता अरविंद दर्शन से प्रभावित हुई तथा तत्पश्चात् वे नवमानववादी रचनाएँ लिखने लगे। पंत जी अपनी कोमल कल्पना के कारण सुविख्यात रहे हैं।

2.सुमित्रानंदन पंत की कृतियों का वर्णन करते हुए उनकी भाषागत विशेषताओं पर भी प्रकाश डालिए।

उ०– कृतियाँ– आपने दीर्घकालिक काव्य-जीवन में हिंदी काव्य-जगत् को अनेक कृतियाँ प्रदान की, जो निम्नलिखित हैं—

(अ) लोकायतन– इस महाकाव्य में कवि की सांस्कृतिक और दार्शनिक विचारधारा अभिव्यक्त हुई है। इसमें ग्राम्य-जीवन और जन-भावना को स्वर प्रदान किया गया है।

(ब) पल्लव– इस काव्य-संग्रह ने कवि को छायावादी कवि के रूप में स्थापित किया। इसमें प्रेम, प्रकृति और सौंदर्य पर आधारित व्यापक चित्र प्रस्तुत किए गए हैं।

(स) वीणा– इस काव्य-संग्रह में कवि के प्रारंभिक गीत संकलित हैं, जो प्रकृति के अपूर्व सौंदर्य को चित्रित करते हैं।

(द) ग्रंथि– इस काव्य-संग्रह में कवि की वियोग-व्यथा को व्यक्त करने वाली रचनाएँ हैं। प्रकृति यहाँ भी सहचरी बनकर कवि को संबल प्रदान करती हुई चलती है।

(य) गुंजन– इसमें कवि की गंभीर और प्रौढ़ रचनाएँ संकलित हैं, जो कि प्रकृति-प्रेम और सौंदर्य से संबंधित हैं।

(र) युगांत, ग्राम्या एवं युगवाणी– इन संग्रहों की रचनाओं पर प्रगतिवाद और समाजवाद का प्रभाव है। कवि का मानव हृदय दलित पीड़ित के प्रति द्रवित हो उठा है।

(ल) अन्य– स्वर्णधूलि, उत्तरा, अतिमा, स्वर्णकिरण आदि रचनाओं में पंत जी महर्षि अरविंद के अंतश्चेतनावाद को भाव एवं शब्द प्रदान करते नजर आते हैं।

उपर्युक्त कृतियों के अतिरिक्त 'चिदंबरा', 'कला और बूढ़ा चाँद', 'शिल्पी' आदि पंत जी की अन्य महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं।

भाषागत विशेषताएँ– कवि की भाषा प्रांजल और साहित्यिक खड़ीबोली हिंदी है। भावानुकूल भाषा का प्रयोग शैली को सरस और सरल बनाता है। इनकी शैली में मधुरता, सरलता, चित्रात्मकता एवं संगीतात्मकता सर्वत्र विद्यामन है। भाषा में कोमलता, सुकुमारता के साथ-साथ लाक्षणिकता भी देखी जा सकती है।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) चींटी को देखा? ..... कनके चुनती अविरत!

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड'के 'सुमित्रानंदन पंत' द्वारा रचित 'युगवाणी' काव्य संग्रह 'चींटी' नामक शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने चींटी जैसे लघु प्राणी की श्रमशीलता का वर्णन करके मनुष्य को इससे प्रेरणा लेने का संदेश दिया है।

व्याख्या– कवि कहता है कि क्या तुमने कभी चींटी को ध्यानपूर्वक देखा है? चींटियों की पंक्ति एक सरल (सीधी) काली और विरल रेखा के समान प्रतीत होती है। वह अपने छोटे-छोटे पैरों से प्रति क्षण चलती रहती है। चींटियाँ जब मिलकर चलती हैं तो ऐसा मालूम पड़ता है जैसे कोई पतला काला धागा हिल-डुल रहा हो। कवि आगे कहता है कि वह चींटियों की पंक्ति (कतार) है। तुम ध्यान से देखो कि वह किस प्रकार निरंतर चलती रहती है। वह निरंतर अपने काम में जुटी रहती है और अपने व अपने परिवार के लिए छोटे-छोटे उपयोगी कणों को बिना रुके लगातार चुनती रहती है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने यहाँ चींटियों की कर्मठता का सजीव चित्रण कर मनुष्य को कर्मठता का संदेश दिया है। **2.** चींटियों की लघुता एवं कर्मठता का तुलनात्मक स्वरूप इस भाव को अभिव्यक्त करता है कि शारीरिक क्षमता का कर्मठता से कोई संबंध नहीं है, यह तो एक मानसिक प्रवृत्ति है। **3.** भाषा– साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली–** वर्णनात्मक **5. रस–** वीर रस (कर्मवीरता के कारण) **6. गुण–** ओज **7. अलंकार–** पुनरुक्तिप्रकाश, उपमा एवं अनुप्रास।

(ब) चींटी है प्राणी ..... की चिनगी अक्षय!

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने चींटी के गुणों और उसकी क्रियाशीलता का वर्णन किया है।

व्याख्या– चींटी एक सामाजिक प्राणी है। चींटी का अपना एक समाज होता है और उसी के साथ वह हिल मिलकर नियमपूर्वक रहती है। वह कठोर परिश्रमी जीव है और उसमें एक अच्छे नागरिक के सभी गुण विद्यमान हैं।

कवि कहता है कि तुमने चींटी को ध्यान से देखा होगा। वह अत्यधिक लघु प्राणी है, परंतु उसका हृदय एवं आत्मबल अत्यंत विशाल है। चींटियों की पंक्ति भूरे बालों की कतरन के समान दिखाई देती है। उसकी लघुता को सभी जानते हैं, लेकिन उसके हृदय में असीम साहस है। वह सारी पृथ्वी पर, जहाँ चाहती है, निर्भय होकर विचरण करती है, उसे किसी भी स्थान पर घूमने में भय नहीं लगता है। वह लगातार अपने श्रम से, भोजन को एकत्र करने के काम में तल्लीन होकर जुटी रहती है। चींटी श्रम की साकार मूर्ति है। वह जीवन की कभी नष्ट न होने वाली चिंगारी है। चींटी एक अतिलघु प्राणी है, परंतु उसमें जीवन की संपूर्ण ज्योति जगमगाती है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने यहाँ चींटी का उदाहरण देकर मानव को प्रेरित किया है और उसे निरंतर अपना कर्तव्य करते रहने की शिक्षा दी है। कवि छोटे दिखने वाले जीवन में भी महानता ढूँढने में सक्षम है। कवि ने यहाँ परिश्रम के महत्व पर भी प्रकाश डाला है तथा सामाजिकता को एक बड़े बल समूह के रूप में प्रदर्शित किया है। **2. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **3. शैली–** वर्णनात्मक **4. रस–** वीर रस (कर्मवीरता के कारण) **5. गुण–** ओजमिश्रित प्रसाद **6. अलंकार–** उपमा एवं अनुप्रास।

(स) चंद्रलोक में प्रथम ..... देशों के जन।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठय पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'सुमित्रानंदन पंत' द्वारा रचित 'ऋता' काव्य संग्रह से 'चंद्रलोक में प्रथम बार' शीर्षक से उदधृत है।

प्रसंग– इन पंक्तियों में कवि ने मानव के चंद्रमा पर पहुँचने की ऐतिहासिक घटना के महत्व को व्यक्त किया है। यहाँ कवि ने उन संभावनाओं का भी वर्णन किया है, जो मानव के चंद्रमा पर पैर रखने से साकार होती प्रतीत हो रही हैं।

व्याख्या– कवि कहता है कि जब चंद्रमा पर प्रथम बार मानव ने अपने कदम रखे तो ऐसा करके अपने देश-काल के उन सारे बन्धनों, जिन पर विजय पाना कठिन माना जाता था, छिन्न-भिन्न कर दिया। मनुष्य को यह आशा बँध गई कि इस ब्रह्मांड में कोई भी देश और ग्रह-नक्षत्र अब दूर नहीं है। यह निश्चय ही मनु के पुत्रों (मनुष्यों) की दिग्विजय है यह ऐसा महत्वपूर्ण ऐतिहासिक क्षण है कि अब सभी देशों के निवासी मानवों को परस्पर विरोध समाप्त करके एक-दूसरे के निकट आना चाहिए और प्रेम से रहना चाहिए। यह संपूर्ण विश्व ही अब एक देश में परिवर्तित हो गया है। सभी देशों के मनुष्य अब एक-दूसरे के निकट आएँ, यही कवि की आकांक्षा है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ कवि ने वैज्ञानिक घटना के परिप्रेक्ष्य में दार्शनिक आदर्शों की प्रेरणात्मक अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है। **2. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **3. शैली–** प्रतीकात्मक **4. रस–** वीर **5. गुण–** दोष **6. अलंकार–** अनुप्रास, रूपक।

(द) फहराए ग्रह उपग्रह ..... विस्तृत मन!

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– कवि कामना करते हुए यहाँ यह कह रहा है कि पृथ्वी का आँचल सभी उपग्रहों पर फहराए और सभी जगह भाईचारा व्याप्त हो।

व्याख्या– कवि का कथन है कि मैं अब यह चाहता हूँ कि ब्रह्मांड के ग्रहों-उपग्रहों में इस पृथ्वी का श्यामल अंचल फहराने लगे। तात्पर्य यह है कि मनुष्य अन्य ग्रहों पर भी पहुँचकर वहाँ पृथ्वी जैसी हरियाली और जीवन का संचार कर दे। सुख और वैभव से युक्त इस संसार में मानव-जीवन के कल्याण की वर्षा हो; अर्थात् संपूर्ण संसार में कहीं भी दु:ख और दैन्य दिखाई न पड़े।

अमेरिका और सोवियत रूस नयी दिशाओं की रचना करें, क्योंकि अंतरिक्ष विज्ञान में यही देश सर्वाधिक प्रगति पर हैं। कवि का कहना है कि विश्व में प्रत्येक देश की संस्कृति और सभ्यता भिन्न-भिन्न है तथा अलग-अलग जीवन पद्धतियाँ हैं। इनकी भिन्नता समाप्त होनी चाहिए। तात्पर्य यह है कि सभी जीवन-पद्धतियाँ आपस में मिलकर एक हो जाएँ और मन की संकुचित भावना का अंत कर लोग उदार बनें तथा विश्व-मानव में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का विकास हो।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ कवि ने चारों ओर कल्याणमय जीवन के प्रसार की कामना की है। **2. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **3. शैली–** प्रतीकात्मक **4. रस–** वीर **5. गुण–** ओज **6. अलंकार–** रूपक एवं अनुप्रास।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

(अ) चींटी है प्राणी सामाजिक, वह श्रमजीवी, वह सुनागरिक।

भाव स्पष्टीकरण– कवि पंत जी अपने भावों को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि चींटी एक सामाजिक प्राणी है, उसका अपना समाज होता है, जिसमें वह हिल-मिलकर नियमपूर्वक रहती है। वह कठोर परिश्रमी होती है तथा उसमें अच्छे नागरिक के सभी गुण होते हैं, अर्थात् मनुष्यों को भी चींटी जैसे लघु जीव से प्रेरणा लेते हुए परिश्रमी एवं अच्छा नागरिक बनने का प्रयत्न करना चाहिए तथा समाज में मिल-जुलकर नियत व कर्तव्यों का पालन करते हुए रहना चाहिए।

(ब) दिग्-विजयी मनु-सुत, निश्चय, यह महत् ऐतिहासिक क्षण, भू-विरोध हो शांत।

भाव स्पष्टीकरण– चंद्रलोक में प्रथम बार मानव के कदम रखने पर पंत जी अपने भाव स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि यह निश्चय ही मनु-पुत्रों अर्थात् मानव की बहुत बड़ी जीत (दिग्विजय) है। यह ऐसा महत्वपूर्ण ऐतिहासिक क्षण है जब सभी देशों के निवासियों को आपसी भेदभाव को समाप्त करके एक-दूसरे के समीप आना चाहिए अर्थात् पृथ्वी पर सब तरफ शांति का वातारण हो।

(स) अणु-युग बने धरा जीवन हित, स्वर्ग सृजन का साधन।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि पंत जी स्पष्ट करना चाहते हैं कि विज्ञान का संपूर्ण विकास मानव-जीवन के कल्याण के लिए ही होना चाहिए। परमाणु शक्ति मानव-जीवन के विनाश का साधन न होकर पृथ्वी पर स्वर्ग के निर्माण का साधन बननी चाहिए अर्थात् मनुष्य द्वारा परमाणु शक्ति का प्रयोग मानव के हित के लिए ही होना चाहिए जिससे पृथ्वी पर मनुष्य स्वर्ग के सुखों का अनुभव कर सके।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. पंत जी की माता का देहांत उनके जन्म के कितने समय बाद हुआ?

(अ) पाँच दिन (ब) **छः घंटे**

(स) छः वर्ष (द) पाँच वर्ष

2. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना पंत जी की नहीं है?

(अ) लोकायतन (ब) पल्लव

(स) ग्रंथि (द) **सतसई**

3. पंत जी की किस रचना पर उन्हें 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित किया गया?

(अ) लोकायतन (ब) **चिदंबरा**

(स) कला और बूढ़ा चाँद (द) इनमें से कोई नहीं

4. निम्न में से कौन 'प्रकृति के सुकुमार कवि' हैं?

(अ) **सुमित्रानंदन पंत** (ब) बिहारी

(स) महादेवी वर्मा (द) रसखान

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण-बोध

1निम्नलिखित पद्यांशों में अलंकार निरूपण कीजिए–

(अ) गाय चराती, धूप खिलाती,
बच्चों की निगरानी करती, लड़ती, अरि से तनिक न डरती,
दल के दल सेना सँवारती, घर आँगन, जनपथ बुहारती।

उ०– प्रस्तुत पद्यांश में अनुप्रास अलंकार है।

(ब) अणु-युग बने धरा जीवन हित, स्वर्ग सृजन का साधन,
मानवता ही विश्व सत्य, भू-राष्ट्र करें आत्मार्पण!

उ०– प्रस्तुत पद्यांश में अनुप्रास अलंकार है।

2निम्नलिखित पद्यांशों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए–

(अ) वह भी क्या देही है, तिल-सी? प्राणों की रिलमिल झिलमिल सी!
दिन भर में वह मीलों चलती, अथक, कार्य से कभी न टलती।

उ०– काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ कवि ने मानव को चींटी का उदाहरण देकर प्रेरित किया है और उसे निरंतर अपना कर्तव्य करने की शिक्षा दी है। **2.** कवि ने तुच्छ दिखने वाले जीवन में भी महानता का तत्व ढूँढ़ा है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली–** वर्णनात्मक **5. रस–** वीर (कर्मवीरता के कारण) **6. गुण–** ओज **7. अलंकार–** अनुप्रास, उपमा।

(ब) युग-युग का पौराणिक स्वप्न, हुआ मानव का संभव,
समारंभ शुभ नए चंद्र-युग का, भू को दे गौरव!

उ०– काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ कवि ने मानव के चंद्रमा पर पहुँचने को नए युग का आरंभ माना है। **2.** कवि के अनुसार मानव का चंद्रमा पर पहुँचना समस्त पृथ्वी व मानव जाति के लिए सम्मान की बात है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली–** प्रतीकात्मक **5. रस–** वीर **6. गुण–** ओज **7. अलंकार–** पुनरुक्तिप्रकाश, अनुप्रास।

(छ) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।